सिनेमा (प्रलेखात्मक फिल्म) और आदिवासी कला

अभिषेक चौरसिया*
achourasia1@gmail.com

डॉ. किशोर इंगले†
मो. 9890691341

शोध सार

सिनेमा एक सशक्त माध्यम है जो मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों को प्रस्तुत करता है। जब सिनेमा सूचनात्मक और वास्तविक घटनाओं पर केंद्रित होता है, तो उसे वृत्तचित्र (प्रलेखात्मक फिल्म) कहा जाता है। वृत्तचित्र फिल्मों का उद्देश्य किसी विषय, समाज या कला को प्रामाणिक रूप से दर्शाना होता है। आदिवासी कला भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें भित्तिचित्र, मूर्तिकला, नृत्य और पारंपरिक चित्रकला जैसे विविध रूप शामिल हैं। यह कला आदिवासी समुदायों की मान्यताओं, परंपराओं और प्रकृति से उनके संबंध को अभिव्यक्त करती है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि वृत्तचित्र फिल्मों के माध्यम से आदिवासी कला को कैसे संरक्षित और प्रचारित किया जा सकता है। यह शोध आदिवासी कला के सिनेमा में चित्रण, वृत्तचित्रों की भूमिका, और डिजिटल युग में इसके प्रभाव का विश्लेषण करेगा। इससे न केवल आदिवासी कला को संरक्षण मिलेगा, बल्कि इसे एक वैश्विक पहचान भी प्राप्त होगी।

बिज़ शब्द:

सिनेमा, वृत्तचित्र (प्रलेखात्मक फिल्म), आदिवासी कला, सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक चित्रकला, भित्तिचित्र, डिजिटल युग, संरक्षण, प्रचार-प्रसार, वैश्विक पहचान, मीडिया और कला

प्रस्तावना

भारत वर्ष सांस्कृतिक धरोहर के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, इस कारण से भारतीय कला परंपरा और सिनेमा का गहन संबंध है। सिनेमा मनोरंजन के साथ-साथ समाज, परंपरा और कला संस्कृति को प्रकट करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण भी है। अथवा जब सिनेमा सूचनात्मक और वास्तविक घटनाओं पर केंद्रित होता है, तब इसे **वृतचित्र ((प्रलेखात्मक फिल्म)** कहते है। वृतचित्र के द्वारा किसी भी विषय को संवेदनशीलता और प्रमाणिकता के आधार पर प्रकट किया जाता हैं।

---

* **शोधकर्ता, ललित कला विभाग, (चित्रकला), राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय**

† **मार्गदर्शक, शासकीय कला एवं अभिकल्प महाविद्यालय, लक्ष्मी नगर, नागपुर, महाराष्ट्र**

भारत की प्राचीन सांस्कृतिक में **आदिवासी कला** का अपना एक विशेष स्थान है। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान राज्य में वरली, भील, मीणा, गोंड़, गरासिया, बीगा, रामनामी आदि अन्य जनजातीया पाई जाती है, अन्य राज्यों में भिन्न जनजातीया और और उनकी कलाएँ प्रचलित हैं। जो आदिवासी समुदायों की मान्यताओं, परंपराओं तथा जीवनशैली को उजागर कर रहा है। इन कलाओं में गीत, नृत्य और चित्रकला में भित्ति चित्र, भूमि चित्रकला, गोदना और पट चित्रकला, गीत, दन्त कथाएँ, नृत्य व अन्य कलाएँ पाई जाती हैं।

इस शोध पत्र के अध्ययन से वृतचित्र फिल्मों के माध्यम से आदिवासी कला को किस तरह संरक्षित एवं प्रचारित किया जाता सकता है। और साथ में सिनेमा का इतिहास, वृतचित्रों की भूमिका व डिजिटल युग से आदिवासी कला पर होने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना हैं।

संदर्भ साधनों का अवलोकन:

'विश्व विरासत दिवस: फिल्मों के जरिए कला की बात'

पटना के उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान में **एक दिवसीय लोककला उत्सव पर केंद्रित** विश्व विरासत दिवस के अवसर पर यह लेख **फोकार्टोपीडिया** द्वारा प्रस्तुत किया गया था, इस आयोजन के द्वारा लोककला परंपरा से कला छेत्र के नविन पीढ़ी से अवगत करना था।

'आदिवासी कला'

डा. वीरबाला भावसार द्वारा 2007 में आदिवासी कला नमक पुस्तक, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली से प्रकाशित किया। यह पुस्तक राजस्थान की आदिवासी कला पर आधारित है, जिसमे राजस्थान की भौगोलिक पृष्ठभूमि और आदिम क्षेत्र के साथ भील, मीणा, बीगा आदि जनजातियों की जानकारी देते हुए, आदिवासी समाज एवं कला की रचनात्मकता के मूल स्त्रोत बताया। आदिवासी और लोककला में अंतर बताकर आदिवासी कला के महत्त्व को बताया हैं।

शोध प्रविधि (मेथडोलॉजी):

इस शोध कार्य के लिए वृत्तचित्र सिनेमा में प्रस्तुत आदिवासी कला के चित्रण का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, आदिवासी कला से संबंधित पुस्तकों और लेखों का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त, वेबसाइटों और यूट्यूब (YouTube) जैसे डिजिटल माध्यमों से आदिवासी कलाकारों और कला समीक्षकों के साक्षात्कार एकत्रित किए गए हैं। शोध प्रविधि के रूप में फिल्मों का सर्वेक्षण भी किया गया है, जिससे आदिवासी कला के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझने में सहायता मिली है।

भारतीय सिनेमा का इतिहास और वृत्तचित्रों की भूमिका

भारतीय सिनेमा का इतिहास 1913 में **राजा हरिश्चंद्र** (दादा साहब फाल्के) से शुरू होता है, जो एक पौराणिक कथा पर आधारित फिल्म थी। धीरे-धीरे भारतीय सिनेमा ने सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को अपनाया और एक प्रभावशाली माध्यम बन गया।

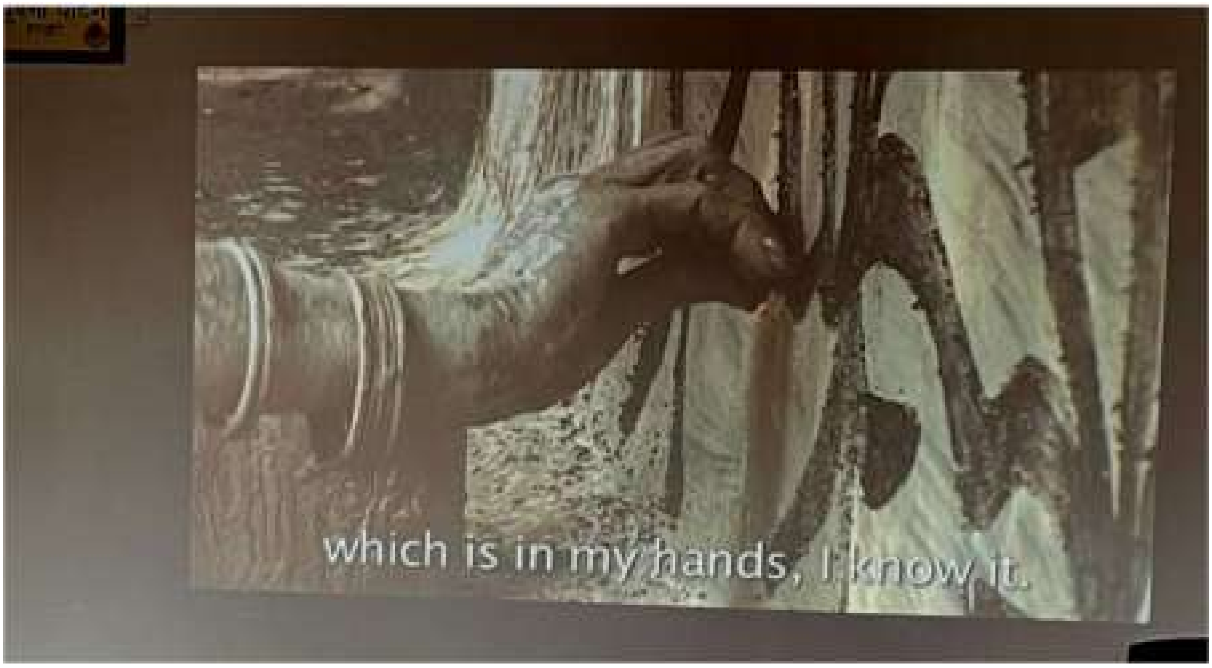

(चित्र क्र. 1 फिल्म 'द वन इयर्ड एलीफैंट फ्रॉम हजारीबाग' का एक दृश्य)

वृत्तचित्र फिल्में भारतीय सिनेमा के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में विकसित हुईं, जिनका उद्देश्य किसी विषय को वास्तविकता के करीब लाना था। वृत्तचित्रों ने विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें आदिवासी कला का चित्रण भी शामिल है। चित्र क्र. 1 में पटना के उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान में **एक दिवसीय लोककला उत्सव पर केंद्रित** विश्व विरासत दिवस के अवसर पर यह लेख **फोकार्टोपीडिया** द्वारा आदिवासी कला प्रस्तुत किया गया है।

(चित्र क्र. 2 थाने जिले के जीव्या सोमा द्वारा रचित वारली चित्रकला)

आदिवासी कला और पारंपरिक चित्रकला

आदिवासी कला भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न रूपों में पाई जाती है। जैसे महारष्ट्र के थाने जिले की वरली आदिवासी भित्ति चित्रकला पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हैं। यह चित्र क्र. 2 आदिवासी चित्रकार जीव्या सोमा की कलाकृति है, एवं इनमें से कुछ प्रमुख कला शैलियाँ हैं:

1. **भित्ति चित्र (Wall Painting):**
   - यह चित्रकला घरों की दीवारों पर की जाती है और इसमें धार्मिक, सामाजिक और प्राकृतिक तत्वों को दर्शाया जाता है।
2. **भूमि चित्रकला (Floor Painting):**
   - विशेष अवसरों और त्योहारों पर ज़मीन पर बनाई जाने वाली रंगीन चित्रकला, जैसे कि कोलम और रंगोली।
3. **हाथ के छाप (Hand Prints):**
   - यह एक पारंपरिक कला रूप है, जिसमें कलाकार दीवारों और कपड़ों पर अपने हाथों के निशान बनाते हैं।
4. **गोदना (Tattoo Art):**
   - आदिवासी समाज में शरीर पर गोदना (टैटू) बनाना सांस्कृतिक प्रतीक है, जो उनकी धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं से जुड़ा होता है।
5. **पट चित्र (Pattachitra Painting):**
   - यह कपड़े या कागज़ पर बनाई जाने वाली चित्रकला है, जो ओडिशा और पश्चिम बंगाल में प्रसिद्ध है।

आदिवासी गीत और नृत्य

आदिवासी संस्कृति में **गीत और नृत्य** का विशेष महत्व है। वृत्तचित्र फिल्मों में आदिवासी गीतों और नृत्यों का प्रदर्शन किया जाता है, जिससे उनकी संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान मिलती है।

1. **आदिवासी गीत:**
   - लोकगीतों में प्रकृति, प्रेम, कृषि और धार्मिक मान्यताओं का वर्णन किया जाता है।
2. **आदिवासी नृत्य:**
   - संथाली, गोंड, भील और वारली नृत्य आदिवासी समाज में लोकप्रिय हैं।

डिजिटल युग में आदिवासी कला का भविष्य

आज के डिजिटल युग में वृत्तचित्र फिल्मों ने आदिवासी कला को एक नया मंच दिया है। डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और ऑनलाइन स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मों के माध्यम से आदिवासी कला का वैश्विक प्रचार हो रहा है।

1. **सरकारी प्रयास:** भारत सरकार के "डिजिटल इंडिया" और "ट्राइबल आर्ट प्रमोशन" जैसे कार्यक्रमों के तहत आदिवासी कला को संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।
2. **ऑनलाइन प्लेटफॉर्म:** YouTube, Netflix, Amazon Prime जैसी स्ट्रीमिंग सेवाओं पर आदिवासी कला पर आधारित वृत्तचित्र उपलब्ध हैं।
3. **वृत्तचित्र फिल्मों का योगदान:** वृत्तचित्रों ने न केवल आदिवासी कला को संरक्षित किया है, बल्कि इसे एक नया व्यावसायिक और सांस्कृतिक आयाम भी दिया है।

निष्कर्ष

यह शोध दर्शाता है कि सिनेमा, विशेष रूप से वृत्तचित्र फिल्में, आदिवासी कला के संरक्षण और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आधुनिक तकनीक और डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से यह कला अधिक लोगों तक पहुँच रही है, जिससे इसे वैश्विक पहचान मिल रही है।
आने वाले समय में वृत्तचित्र फिल्मों और डिजिटल मीडिया के सहयोग से आदिवासी कला को और अधिक प्रोत्साहन दिया जा सकता है, जिससे यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सदा जीवंत बनी रहे।

संदर्भ चित्र सूची:

1. Folkartopedia. (कोई तिथि उपलब्ध नहीं). *फिल्म 'The One-Eyed Elephant from Hazaribagh' का एक दृश्य* [छवि]. Folkartopedia. https://www.folkartopedia.com/blogs/world-heritage-day-art-education-through-art-films/
2. Wikipedia contributors. (2025, फ़रवरी 7). *वारली चित्रकला – थाने जिले के जीव्या सोमा द्वारा रचित चित्र* [छवि]. विकिपीडिया हिंदी। https://hi.wikipedia.org/wiki/वारली_चित्रकला

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Folkartopedia Foundation. (2020). *विश्व विरासत दिवस: फिल्मों के जरिए कला की बात.* Folkartopedia. https://www.folkartopedia.com/blogs/world-heritage-day-art-education-through-art-films/
2. भावसार, व. (2007). *आदिवासी कला* (द्वितीय संस्करण). सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
3. तिवारी, क. (2024, अक्टूबर 17). *संगम वार्ता, प्राचीन ज्ञान की पुनः खोज: गोंड और बैगा जनजातियाँ* [वीडियो]. YouTube. https://youtu.be/zO-6uAqAW3E